विजेता जागो - जनवरी 2024

1.**बुद्धि**-“बुद्धि से घर बनता है, और समझ से यह स्थापित होता है; और ज्ञान के द्वारा कमरे सब प्रकार के बहुमूल्य और मनभावने धन से भर जाते हैं” (नीति 24:3.4)। जैसे ही आप नए साल में प्रवेश करें, एक समझदार व्यक्ति बनने के लिए प्रार्थना करें; वह जो अपने परिवार के प्रत्येक सदस्य से प्यार करता है और उसे महत्व देता है और जो ईश्वरीय ज्ञान का आदर्श है।

2. **सफलता का माध्यम**- "जहां बैल नहीं होते, वहां नांद साफ रहती है, लेकिन बैल की ताकत से बहुत सारा राजस्व मिलता है" (नीति 14: 4)। जीवन में प्रगति के लिए कड़ी मेहनत और दृढ़ संकल्प की आवश्यकता होती है। चयनात्मक बनें और परमेश्वर ने जो कुछ आपके लिए रखा है, उसमें अच्छे निवेशक बनें। यह आपकी सफलता का माध्यम और दूसरों को आशीष देने का साधन हो सकता है।

3.**आपको क्या प्रभावित करता है** - “हे परमेश्वर, कभी-कभी मेरा जीवन बहुत अस्थिर और मेरा भविष्य अनिश्चित लगता है। और फिर भी राजा दाऊद ने कहा कि उनमें अटूट स्थिरता है। मसीह की चेतना के साथ रहकर मुझे भी वही स्थिरता प्रदान करें। मुझे मेरे जीवन में अपनी उपस्थिति का एहसास दिलाएं। मुझे आप पर भरोसा करने में सक्षम करें। तभी मुझे सच्ची स्थिरता मिलेगी।” (प्रेरितों 2:25)

4. **स्वतंत्र वास्तव में** - “प्रिय यीशु, मैं शैतान का दास था—पाप के बंधन में। अब मैं अपने जीवन पर शैतान के प्रभुत्व से पूरी तरह मुक्त हूँ। आपने न केवल मुझे शैतान से मुक्त किया, बल्कि आपने मुझे नए जीवन को जीने के लिए आध्यात्मिक मृत्यु से भी ऊपर उठाया। मुझे आज़ाद करने और सचमुच स्वतंत्र बनाने के लिए धन्यवाद!” (यूहन्ना 8:36)

5. **आध्यात्मिक स्वतंत्रता**- “प्रभु यीशु, आप मुक्तिदाता हैं। आपने मृत्यु, नरक और कब्र पर विजय प्राप्त कर ली। और अब आपकी आत्मा मुझे मुक्त करने के लिए मुझमें निवास करने आई है। मैं आपको अपनी आत्मा, प्राण और शरीर देता हूं। मैं आपसे मुझे अपनी आत्मा से भरने के लिए कहता हूं ताकि आप मुझे स्वतंत्रता में चलने में सक्षम बना सकें। (2 कुरिं 3:17)

6. **परमेश्वर का कार्य करना**- “हे परमेश्वर, सबसे पहले, आपकी व्यवस्था ने मुझे आश्वस्त किया कि मैं पापी था और मेरा शरीर कमजोर था। फिर, मसीह में जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मुझे पाप और मृत्यु की व्यवस्था से मुक्त कर दिया। मुझे एहसास है कि अगर मैं इसे नहीं जीऊंगा तो आपका वचन सुनना व्यर्थ है। मुझे वचन पर चलने वाला बनने में सक्षम बनाने के लिए धन्यवाद।'' (याकूब 1:25)

7. **भीतर वास करने वाली आत्मा** -“धन्यवाद, प्रभु यीशु, कि आपने मुझे हमेशा आराम में रखा। आप अपनी आत्मा के द्वारा मेरे पास आये, कि सर्वदा मेरे साथ रह सकें। आपने मुझे अपने साथ एक आत्मा बना लिया है, इसलिए अब हमारे बीच कोई अलगाव नहीं है। धन्यवाद कि मैं कभी अकेला नहीं हूं। आपकी आत्मा अब मेरे भीतर निवास करती है। (यूहन्ना 14:16-17)

8. **सहभागिता**- परमेश्वर का शुक्र है कि वह आपको प्रार्थना के माध्यम से मसीह के साथ गहरी संगति प्रदान कर रहा है। उनकी उपस्थिति में आपको आध्यात्मिक शक्ति मिलती है और आपको अन्य लोगों को अपने करीब लाने की प्रेरणा मिलती है। (1 कुरिं 1:9)

9. **परिवर्तन** - जब आप परमेश्वर की उपस्थिति में समय बिताते हैं, तो आप धीरे-धीरे अपने स्वामी की तरह बन जाएंगे। प्रार्थना करें कि पवित्र आत्मा आपको यीशु को आपके जीवन में वह स्थान और ध्यान देने में मदद करे जिसके वह हकदार हैं (मत्ती 6:33)।

10. **शांत मत रहो** - जब भी आप किसी न किसी रूप में अपने जीवन में परमेश्वर की आशीष का अनुभव करें, तो अपने अनुभवों के बारे में दूसरों को बताएं। आपके जीवन में परमेश्वर का हस्तक्षेप अन्य लोगों के लिए भी आशीष बन सकता है (लूका 8:39)।

11. **दोगुनी आशीष** - आज परमेश्वर का शुक्र है कि यीशु ने आपके लिए जो किया उसके कारण उसने आपको बचाया है। और उसे धन्यवाद दें कि वह आपको मसीह में विश्वास के माध्यम से अन्य लोगों को अनन्त जीवन प्राप्त करने के लिए आमंत्रित करने की अनुमति भी देता है (लूका 9:2)।

12. **मजबूत बनो** - कम प्रतिबद्धता वाली संस्कृति में, प्रार्थना करें कि आप प्रतिबद्धता और वफादारी में मजबूत, अपने वचन को पूरा करने वाले, भरोसेमंद और निर्भर होने लायक व्यक्ति बनें। (लूका 16:10)

13. **खराई** - खराई का अर्थ "एकीकृत धैर्य" या नैतिक ईमानदारी हो सकता है। प्रार्थना करें कि हम ऐसे व्यक्ति बनें जिनकी जीवन में वास्तव में मायने रखने वाली चीजों पर मजबूत पकड़ हो और हम प्रभु, अपने परिवार, अपने चर्च के साथ अपने संबंधों में इन मूल्यों को जिएं। (नीति 11:3)

14. **ईमानदारी**-ईमानदारी एक ऐसा गुण है जो परमेश्वर और दूसरों के सामने उच्च मूल्य रखता है। पुरुषों के लिए प्रार्थना करें कि वे सच बोलने में समझौता न करें, विवरण को अलंकृत न करें, बल्कि प्यार से सच बोलना सीखने के लिए भी तैयार रहें। (इफि 4:15).

15. **वफ़ादारी**– वफ़ादारी आत्मा का फल का हिस्सा है. प्रार्थना करें कि हम मनुष्य रूप में जान-बूझकर और नियमित रूप से खोज करें कि पवित्र आत्मा द्वारा हमारे जीवन में मसीह के कार्य को प्रतिबिंबित करने के लिए नियंत्रित कर सकें। (इफि 5:18)

16. **चिंता**-"किसी भी बात की चिन्ता न करो, परन्तु हर एक बात में प्रार्थना और विनती में धन्यवाद के साथ अपनी विनती परमेश्वर को बताओ" (फिलि 4:6) यदि हम प्रभु को अपनी चिंताओं के बारे में बताएं तो यह पर्याप्त है। हमें चिंता करने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन सही उत्तर के लिए उस पर भरोसा कर सकते हैं और हमारी ज़रूरतों का ख्याल रखने के लिए पहले से ही उसे धन्यवाद देना शुरू कर सकते हैं।

17. **पुनर्स्थापित** -"वह मेरी आत्मा को पुनर्स्थापित करता है" (भजन 23:3ए) यदि हम प्रभु को हमारी आत्मा को पुनर्स्थापित करने की अनुमति नहीं देते हैं तो यह हमारे लिए असहनीय हो जाता हैं। वह हमेशा सबसे पहले हमें आशीष देना चाहता है ताकि उसने हमें जो दिया है उसे हम आगे बढ़ा सकें। इस तरह हम "जलने" से बच जाते हैं। बहाल होने के लिए तैयार रहो!

18. **अगुवाई** -“धर्म के मार्ग में वह अपने नाम के निमित मेरी अगुवाई करता है” (भजन 23:3बी)। परमेश्वर के पास हममें से प्रत्येक के लिए एक अनोखी और अद्भुत योजना है। जैसे ही हम उसके नेतृत्व पर भरोसा करते हैं, हम प्रत्येक दिन सुरक्षित और आशा के साथ चल सकते हैं।

19. **प्रबंधक** -मसीही होने के नाते हम समझते हैं कि कुछ भी हमारा नहीं है। घर, कार, संपत्ति, मेरा शरीर सब कुछ परमेश्वर का उपहार है और हमें सौंपा गया है। हम इसका आनंद ले सकते हैं, उपयोग कर सकते हैं और हमें इसका उपयोग परमेश्वर के अधीन होना चाहिए। यह परमेश्वर का अपनी आशीष बढ़ाने का तरीका है। (उत्पत्ति 12:2)

20. **एकता** - “इस कारण पुरुष अपने माता पिता को छोड़ अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे एक तन होंगे” (उत्पत्ति 2:24)। परमेश्वर ने हमें पुरुष और महिला के रूप में बनाया है ताकि दोनों के लिए एक नई एकता का निर्माण करें। सच्ची एकता का अनुभव करने में हमारी मदद करने के लिए वह स्वयं इस अनुबंध में तीसरा बनना चाहता है।

21. **सम्पूर्ण अधिकार** - "हे प्रभु, महानता, शक्ति, गौरव, विजय और महिमा, वास्तव में स्वर्ग और पृथ्वी पर जो कुछ भी है वह सब आपका है: प्रभुत्व आपका है, और आप अपने आप को सभी के ऊपर प्रमुख मानते हैं" (1 इतिहास 29:11). आइए हम ऐसे मनुष्य बनें जो सच्ची विनम्रता और आराधना के साथ हमारे परमेश्वर के अधिकार के प्रति समर्पित हों।

22. **सच्ची शक्ति** – “क्योंकि परमेश्वर ने हमें डर की नहीं, परन्तु सामर्थ, प्रेम, और अनुशासन की आत्मा दी है” (2तीमु 1:7)। पुरुष, फायदा उठाए जाने के डर से अपनी मान्यताओं को बलपूर्वक आगे बढ़ाने के लिए प्रलोभित हैं। भय की भावना का विरोध करें. प्रभु को आपके लक्ष्य परिभाषित करने दें और उसकी आत्मा को अनुमति दें कि वह आपको प्रेम और उसकी शक्ति से कार्य करने में सक्षम बनाए।

23. **प्राथमिकताएँ** -“अपना बाहर का काम काज ठीक करना, और खेत में उसे तैयार कर लेना; उसके बाद अपना घर बनाना” (नीति 24:27)। प्रकृति हमें पहले से ही बताती है कि खर्च करने के लिए संसाधन होने से पहले, हमें काम करना और कमाना होगा। अपनी प्राथमिकताएँ चुनने में दूरदर्शी बनें और मूर्खतापूर्ण निवेश करने की लालसा से बचें।

24. **संतोष** -"ऐसा नहीं है कि मैं अभाव के कारण बोलता हूँ, क्योंकि मैं जैसी भी परिस्थिति में रहूँ, मैंने संतुष्ट रहना सीख लिया है" (फिलि 4:11)। बाइबिल के मूल्य और ईश्वरीय प्रेरणा ही हमें केवल अस्थायी संतुष्टि के लालच से मुक्त करते हैं। परमेश्वर के बिजनेस स्कूल में शिक्षार्थी बनने के लिए प्रार्थना करें और उनके खजाने को अपने दिल में संग्रहित करें। इससे सच्ची संतुष्टि मिलेगी।

25. **संपत्ति का प्रबंधन** -“शाबाश अच्छे और विश्वासयोग्य दास, तुम कुछ बातों में विश्वासयोग्य थे, मैं तुम्हें बहुत सी बातों का अधिकारी बनाऊंगा; अपने स्वामी के आनन्द में सम्मिलित हो” (मत्ती 25:21)। हमने अपना जीवन कैसे प्रबंधित किया, इसका अंतिम निर्णय और मूल्यांकन प्रभु के पास है। जिस तरह से हम अपने समय और संसाधनों का प्रबंधन करते हैं, आइए आज ही उसका सम्मान करें।

26. **सर्वशक्तिमान** -हमारे प्रभु परमेश्वर की महिमा और आराधना, उनकी संप्रभुता, शक्ति और शाश्वत ज्ञान के लिए हमारी प्रार्थनाओं का हिस्सा होना चाहिए। यहाँ तक कि सबसे कठिन समय और परिस्थितियों में सारा अधिकार भी उसके हाथ में है। “शांत रहो और जानो कि मैं परमेश्वर हूँ। (भजन 46:10)

27. **संवेदनशील**–“हे प्रभु, मुझे परखो, और मुझे जांच, मेरे हृदय और मेरे मन को जांचो” (भजन 26:2)। कठोर हृदय बहुत हानि पहुँचाता है और घर के अंदर और बाहर तनाव पैदा करता है। आइए प्रभु से प्रार्थना करें कि वह हमारे हृदयों की जाँच करें और उनकी परख करें। पवित्र आत्मा के प्रति संवेदनशील रहें, किए गए पापों का पश्चाताप करने के लिए हमेशा तैयार रहें और परमेश्वर के साथ चलने के लिए दृढ़ रहें।

28. **पुनर्स्थापना**-मसीहियों को तनाव, नफरत से भरी हमारी दुनिया में बदलाव लाने का प्रयास करने के लिए बुलाया गया है। चर्च और मसीही परिवार में भावनात्मक और आध्यात्मिक बहाली के लिए प्रार्थना करें। "परमेश्वर का अनुग्रह ... हमें अधर्म और सांसारिक जुनून को "ना" कहना सिखाती है, और इस वर्तमान युग में आत्म-नियंत्रित, ईमानदार और ईश्वरीय जीवन जीना सिखाती है" (तीतु 2:11.12)।

29. **मध्यस्थता** -“तब, सबसे पहले, मैं आग्रह करता हूं कि अनुरोध, प्रार्थना, मध्यस्थता और धन्यवाद सभी के लिए किया जाए⋯” (1 तिमु 2:1)। हर किसी की चाहत शांति और सुरक्षा की है. परमेश्वर, हमें अपने परिवार, अधिकारियों, अपने शहर, राज्य और राष्ट्र की ओर से हस्तक्षेप करना सिखाएं। हम प्रार्थना करते हैं कि सभी क्षेत्रों में आपको प्रभुओं के प्रभु के रूप में पहचाना जाए।

30. **चर्च**–“अब प्रभु, उनकी धमकियों पर विचार करें और अपने सेवकों को अपनी बात बड़े साहस के साथ कहने में सक्षम करें” (प्रेरित 4:29)। प्रभु यीशु, आपने अपने चर्च को दुनिया में सुसमाचार लाने का कार्य दिया है। हम आपके लोगों को उनके परिवेश में स्पष्ट और दृढ़ रूप से गवाही देने में सशक्त बनाने के लिए पवित्र आत्मा की दुहाई देते हैं।

31. **समृद्धि**-"तू अपने परिश्रम का फल खाएगा, आशीष और समृद्धि तुझे मिलेगी" (भजन 128:2)। हमें उन पुरुषों के लिए प्रार्थना करनी चाहिए जो काम की तलाश में हैं;लेकिन जो लोग नौकरीपेशा हैं उनके लिए प्रार्थना करें कि उनके पास अपने माल के प्रबंधन में बुद्धि और विवेक हो।